आमुख कथा

## सभ्यता के दो रोग

# अहंकार और अपराध-भाव

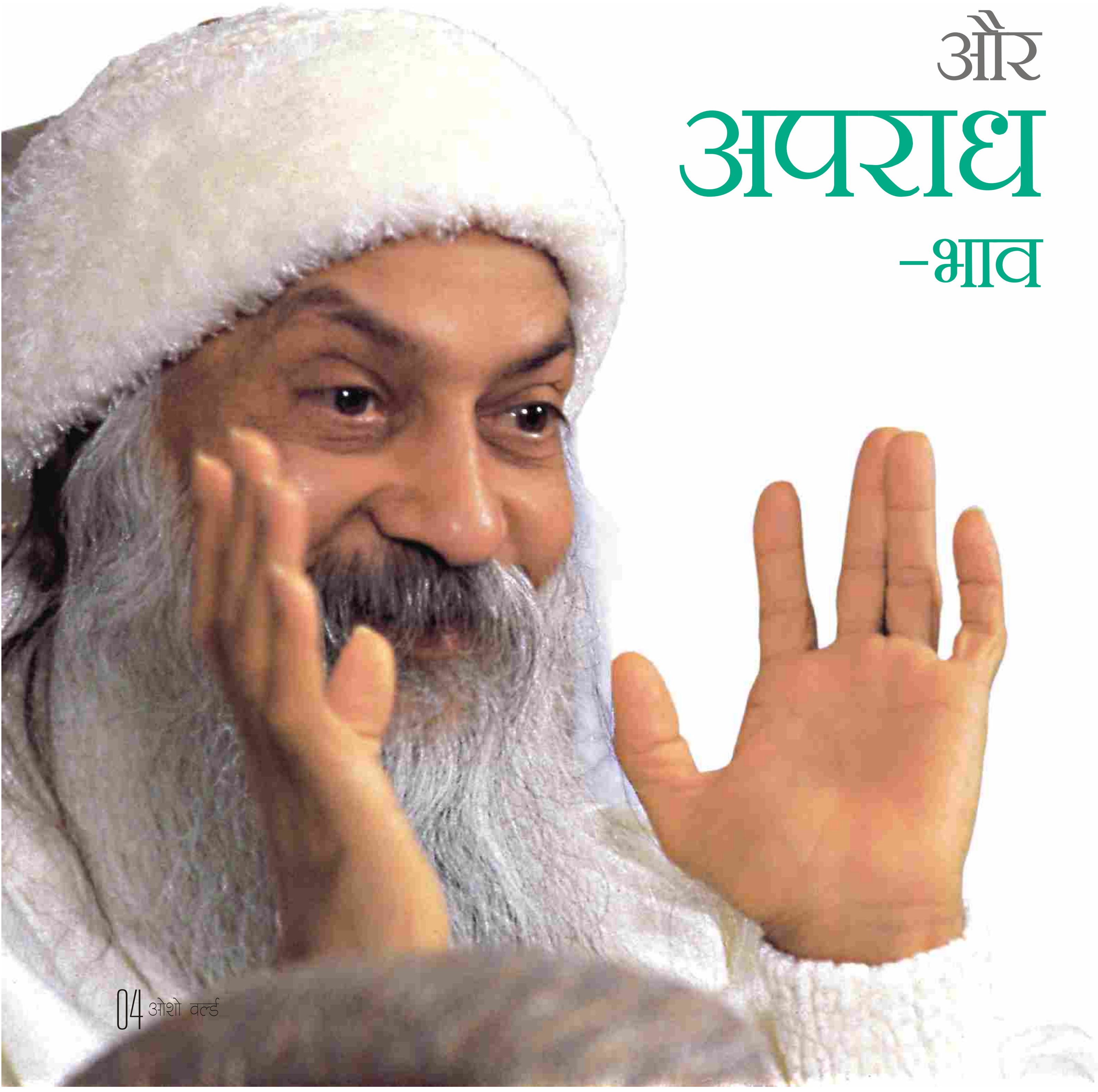

*प्रश्न : बर्ट्रेंड रसेल ने कहीं कहा है कि आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या अपराध-भाव है। क्या यह बात सही है? और यदि सही है, तो उससे मुक्त होने को वह क्या करे?*

यह बात बहुत गहरे अर्थों में सही है। और आज ही ऐसा है, ऐसा नहीं; सदा से मुनष्य की समस्या रही है अपराध-भाव। जब मैं कहता हूं सदा से, तो मेरा अर्थ है, जब से आदमी सभ्य हुआ।

असभ्य आदमी को कोई अपराध-भाव नहीं होता। वह ऐसे ही सरलता से जीता है, जैसे बच्चे, जैसे पशु-पक्षी, पौधे। सभ्यता का जन्म ही अपराध-भाव से होता है।

अपराध-भाव का अर्थ है, हम प्रत्येक बच्चे को कहते हैं कि तुम्हें ऐसा होना चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर बच्चा जब भी अपने को पाता है उस दिशा में झुकता, जैसा नहीं होना चाहिए, तो अपराध की वृत्ति पैदा होती है, गिल्ट पैदा होती है, ग्लानि पैदा होती है। और जब भी पाता है उस दिशा में झुकता हुआ, जैसा हम कहते हैं होना चाहिए, तो अहंकार पैदा होता है।

सभ्यता दो रोग पैदा करवाती है, एक तरफ अहंकार और एक तरफ अपराध। तुमने किसी बच्चे को कहा, सिगरेट नहीं पीना; महापाप है, नरक में सड़ोगे। तुमने डरवाया। अब अगर पीएगा, तो अपराध-भाव पैदा होगा कि मैंने कुछ पाप किया। मां-बाप से झूठ बोला, छिपाया। वह डरा-डरा घर आएगा। चौकन्ना रहेगा कि कहीं न कहीं से खबर मिलने ही वाली है। कोई न कोई देख ही लिया होगा। कपड़े में बास आ जाएगी मां को। मुंह को पास लाएगा, तो मुंह से पता चल जाएगा। वह पकड़ा ही जाने वाला है। वह अपराध से भरा हुआ है, डर रहा है, घबड़ा रहा है।

अगर यह भय बहुत गहरे बैठ जाए, तो तुम जीवन भर डरते ही डरते समाप्त हो जाते हो। तुम जी ही नहीं पाते। भयभीत जीएगा। कैसे! अपराध तुम्हारे जीवन को चूस डालता है।

अगर सिगरेट न पी; पीने की आकांक्षा थी, पीने का मन था, हाथ में उठा ली थी, फिर छोड़ दी, त्याग कर दी, तो अकड़ पैदा होगी, अहंकार पैदा होगा। यह लड़का घर और ही चाल से चलता हुआ आएगा, कि इसने कोई महाकार्य कर लिया है, कि जैसे यह परमात्मा की नजरों में बहुत ऊपर उठ गया। स्वर्ग बिलकुल निश्चित है!

छोटे बच्चों को तो छोड़ दो, तुम्हारे बड़े साधु-संन्यासी भी ऐसी ही छोटी बातों में स्वर्ग और नरक का हिसाब लगा रहे हैं! किसी ने उपवास कर लिया; वह पक्का मानकर बैठा है कि स्वर्ग में बैंड-बाजे लिए परमात्मा खड़ा है। जैसे ही वह मरेगा कि बैंड-बाजे बजे, हाथ पर जुलूस निकला!

**और इस संसार में सबसे बड़ी बुरी बात है, आत्मनिंदा का भाव पैदा हो जाए। क्योंकि जिसको आत्मनिंदा पैदा हो गयी, वह कैसे पहचानेगा भीतर के परमात्मा को? वह तो इतना निंदित हो गया कि वह कभी सोच भी नहीं सकता कि मेरे भीतर और परमात्मा हो सकता है**

बचकानी बुद्धि है। तुमने किया क्या है? भोजन नहीं किया, कि सिगरेट नहीं पी, कि पान नहीं खाया। कुछ हैं कि जिन्होंने पान खा लिया है, सिगरेट पी ली है, वे घबड़ा रहे हैं कि नरक का द्वार खुला, अब खुला। अब देर नहीं है और शैतान ने दबोचा!

दोनों ही बातें नासमझी की हैं। और दोनों ही के पीछे कारण है। कारण है, समाज, राज्य, धर्म। समाज जीता है व्यक्ति को डराकर, भयभीत करके। पहले डराओ। जब आदमी बिलकुल घबड़ा जाए, तब उसको बचाने आ जाओ। यह जाल है।

मैंने सुना है, एक गांव में दो भाई थे। उनका धंधा बहुत अच्छा चलता था। एक भाई रात में जाकर लोगों की खिड़कियों पर डामर फेंक आता था। और दूसरा भाई सुबह से निकलता था चिल्लाता हुआ, किसी को कांच तो साफ नहीं करवाने हैं? धंधा बड़ा परिपूर्ण था। उसमें कभी ऐसा होता ही न था कि ग्राहक न मिलें। पहला भाई ग्राहक पैदा कर जाता था, दूसरा भाई सुबह जाकर लोगों के कांच पर डामर साफ कर आता था।

पहले पुरोहित तुम्हें डराता है। जब तुम भयभीत हो जाते हो, तब तुम्हें सांत्वना देता है कि घबड़ाओ मत। हमारे पास कुंजियां हैं, उपाय हैं, जिनसे तुमने अगर पाप भी किए हैं, तो भी क्षमा हो जाओगे। जिनसे अगर तुमने अपराध भी किए हैं, तो अपराध तुम्हें नरक में न ले जाएंगे। हमारे पास मंत्र हैं, यज्ञ का साधन है। अगर तुमने हमारी सुनी और मानी, तो क्षमा कर दिए जाओगे। घबड़ाओ मत, बचाने का उपाय है। बचने की संभावना है।

मनुष्य को पहले हम रुग्ण करते हैं, फिर इलाज। पहले बीमार करते हैं, फिर चिकित्सा करते हैं। ऐसे धंधा चलता है।

आदमी स्वस्थ है, कुछ करने की जरूरत नहीं है। लेकिन यह जारी रहेगा, क्योंकि राजनेता व्यर्थ हो जाएगा, अगर तुम घबड़ाए न। अगर तुम डरे न, तो राजनेता तुम्हें युद्धों में न झोंक सकेगा। अगर तुम डरे न, तो मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे खाली हो जाएंगे। क्योंकि कौन वहां घुटने टेककर प्रार्थना करेगा? अगर तुम डरे न, तो समाज की छाती पर जो लोग बैठे हैं, वे बैठे न रह सकेंगे। तब व्यक्ति मुक्त होने लगेगा। समाज बिखरने लगेगा। लोग सरल हो

जाएंगे, लोग नैसर्गिक हो जाएंगे, लोग आनंद-भाव को उपलब्ध हो जाएंगे, लेकिन तब दुष्टों की, शोषकों की, पीड़ित करने वालों की, परपीड़कों की बड़ी कठिनाई हो जाएगी। वे क्या करेंगे?

इसलिए यह सारा खेल है। जैसे ही आदमी सभ्य हुआ है, सबसे बड़ी दुर्घटना जो घटी है, वह है, उसके भीतर अपराध-भाव पैदा हो गया। और कैसी-कैसी छोटी बातों पर अपराध-भाव पैदा हो जाता है।

मैं छोटा था। तो मेरे घर में पर्युषण के दिन आते, जैनों का त्यौहार आता, तो सब बड़े उपवास करते। स्वभावतः, जब बड़े उपवास करते हैं, तो छोटे भी अनुकरण करते हैं। न करो, तो ऐसा लगता है, पाप कर रहे हैं; तो बड़ी अकड़ पैदा होती है कि कोई महाकार्य कर लिया! सिर्फ भूखे मरे हैं, महाकार्य कर लिया।

मैं छोटा था, तो जब घर में सभी उपवास कर रहे हों, तो मुझे भी करना चाहिए। कोई जबरदस्ती न थी। लेकिन न करो, तो ऐसा लगता कि जैसे अभी तक मनुष्य जाति के हिस्से नहीं है। अभी थोड़े मनुष्य जाति से नीचे हो।

फिर दूसरों के घरों में दूसरों के बच्चे कर रहे हैं। यह भी बड़ी पीड़ा का कारण था, कि फलाने के लड़के ने उपवास कर लिया। या तो भूखे न मरो, तब अहंकार की तृप्ति नहीं होती। भूखे मरो, तो अहंकार की तृप्ति हो सकती है। अगर न करो, तो अपराध-भाव पैदा होता है कि तुम्हीं कुछ गलत हो, बाकी सब कर रहे हैं।

रात प्यास लग आए, तो पानी नहीं पी सकते। घर के लोग समझाएं भी कि पी लो, तुम अभी बच्चे हो। उससे भी दुख होता है कि अभी हम बच्चे है, इसीलिए पीने को कहा जा रहा है, वैसे तो यह पाप है। तो अकड़ पैदा होती है कि मत पीओ, रात गुजार ही दो किसी तरह। बच्चे तो जिद्दी होते भी है। किसी तरह रात तकलीफ में गुजार दो, सुबह की राह देखो।

प्रकृति के विपरीत जो भी करवाया जा रहा है, उससे अहंकार पैदा होगा, अगर करोगे। अगर न करोगे, तो अपराध पैदा हो जाएगा, क्योंकि दूसरे कर रहे हैं, आगे निकले जा रहे है, तुम पीछे छूटते जा रहे हो।

तुम न नीचे हो, न तुम ऊपर हो। तुम बस तुम हो। तुम न तुलना करते हो किसी से अपनी, न निंदा करते हो; न अपना गुणगान करते हो, न अपनी स्तुति करते हो। इस सहजता का नाम ही स्वभाव है, स्वधर्म है

और इस संसार में सबसे बड़ी बुरी बात है, आत्मनिंदा का भाव पैदा हो जाए। क्योंकि जिसको आत्मनिंदा पैदा हो गयी, वह कैसे पहचानेगा भीतर के परमात्मा को? वह तो इतना निंदित हो गया कि वह कभी सोच भी नहीं सकता कि मेरे भीतर और परमात्मा हो सकता है। महावीर के भीतर होगा, बुद्ध के भीतर होगा, कृष्ण के भीतर होगा, मेरे भीतर हो सकता है? रात पानी पी लिया! उपवास का दिन था; भूख लग गयी।

तुम्हारे भीतर परमात्मा हो सकता है, यह बात ही मुश्किल हो जाएगी, जितनी अपराध की पर्त मजबूत हो जाएगी। और अहंकार की पर्त मजबूत हो जाए, तो भी मुश्किल हो जाएगी कि तुम्हारे भीतर परमात्मा है।

अहंकार भी जानने नहीं देता और अपराध भी जानने नहीं देता। दोनों से जो मुक्त हो जाता है, उसको ही मैं सरल-साधु कहता हूं। न तो जो अपराध की धारणा रखता है अपने भीतर। भूख लगी तो भोजन किया, प्यास लगी तो पानी पीया, नींद आयी तो सो गए। जो जीवन को इतनी सरलता से चलाता है कि प्रकृति को नाहक लड़ाई-झगड़े में नहीं डालता। और न ही किसी अहंकार को अर्जित करता है। कर भी नहीं सकता।

अगर तुम नींद आए तभी सो जाओ, तो अहंकार कैसे अर्जित करोगे? तुम कैसे कहोगे कि मैं सिर्फ दो ही घंटे साता हूं! तुम कैसे कहोगे कि मैं रोज ब्रह्ममुहूर्त में उठता हूं; मैं कोई साधारण आदमी नहीं हूं। पूरे जीवन में ब्रह्ममुहूर्त में ही उठा हूं। तुम कैसे कहोगे कि मैंने कितने उपवास किए, कितने व्रत रखे।

अगर तुम समझ लो, अपराध छूट जाए, तो अहंकार भी छूट जाता है, क्योंकि उसका कोई उपाय ही नहीं बचता। तब तुम होते हो, जैसे नहीं हो। और यही होने का श्रेष्ठतम ढंग है। ऐसे, जैसे नहीं हो। न तुम ग्लानि से भरे हो और न तुम किसी की छाती पर खड़े होने की चेष्टा कर रहे हो। न तुम अपने को नीचा मानते हो कि दूसरों को अपने सिर पर खड़ा करो, न तुम अपने को ऊंचा मानते हो कि किसी के सिर पर खड़े हो जाओ।

तुम न नीचे हो, न तुम ऊपर हो। तुम बस तुम हो। तुम न तुलना करते हो किसी से अपनी, न निंदा करते हो; न अपना गुणगान करते हो, न अपनी स्तुति करते हो। इस सहजता का नाम ही स्वभाव है, स्वधर्म है। और तभी तुम अपने भीतर के परमात्मा का आविष्कार कर पाओगे।

बचने के दो उपाय हैं, अपराध और अहंकार। पाने का एक ही उपाय है, दोनों को छोड़ दो, दोनों को गिरा दो। स्वीकार कर लो अपनी सहजता को, निसर्ग को। मत व्यर्थ का संघर्ष खड़ा करो। लड़ो मत नदी से; बहो।

*— ओशो*

*गीता दर्शन, भाग-आठ*

*अध्याय-18, प्रवचन-11, प्रश्न-4*

*(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)*